वियन्सेन (फ्रान्स)
नवम्बर १४, २००२

सन्देश संख्या ५२
'सत्यलोक' में क्रियायोग

''सत्यलोक'' – वाराणसी (भारत) में वंशानुगत क्रियायोग का एक मंदिर।
''मूर्ति'' – विशाल शिवलिंग (ब्रह्माण्डीय समागम का प्रतीक)।
''प्रतिमायें'' – लाहिड़ियों की (श्यामाचरण, तिनकौड़ी, सत्यचरण – क्रमशः शिवेन्दु लाहिड़ी के प्रपितामह, पितामह तथा पिता)।

सत्यलोक जीवन्त मन्दिर है। यह एक ऐसी प्रयोगशाला है जहाँ हम जीना और दूसरों को जीने देना, जीवन के प्रति खुला एवं सर्वग्राही दृष्टिकोण रखना, उस परम पावन, जिसकी पवित्रता अगाध है, के साथ प्रेम में होना, सीखते हैं। यहाँ पर हम प्रत्यक्षबोध की क्रियाओं में होते हैं न कि मन की आत्म–संरक्षी यंत्ररचना की संपुष्टि में जो स्पष्टतः प्रतिक्रियायें हैं। यहाँ पर हम आत्मानुभूति (आत्मबोध) के नाम पर आत्मप्रवर्तन और आत्मविस्तार को प्रोत्साहित नहीं करते हैं। आत्मानुसंधान के नाम पर हम आत्मसम्मोहित नहीं हैं। आत्मविकास की आड़ में हम प्रकारान्तर से स्वार्थपरता में लिप्त नहीं हैं। हमारे यहाँ व्यक्ति स्वयम् उपयुक्त रूप में व्यवस्थित रहते हैं, कोई उन्हें व्यवस्था के अन्तर्गत आदेशित नहीं करता है। हम सुव्यवस्थित तो हैं किन्तु हमारा केाई संगठन, सम्प्रदाय या पंथ नहीं है। हम अनुप्राणित और प्रेरित तो हैं किन्तु हमारी कोई संस्था या कोई निहित उद्देश्य नहीं है। हम पूर्ण रूपेण समर्पित हैं किन्तु किसी वश्यता के अधीन या जीहुजूरी के लिए विवश नहीं हैं। हम बिना किसी प्रतिबन्ध के पूर्ण रूप से मुक्त हैं। यह मुक्ति अपने लिए नहीं बल्कि अपने आप से अर्थात् अपनी 'अहंता' से है। यहाँ 'निर्मन' समझदारी की ऊर्जा है। अपनी सम्पूर्ण लालसा, भीरूता, निर्भरता और आसक्ति से युक्त क्षुद्र मन का सत्यलोक में कोई खास महत्व नहीं है। यहाँ शान्ति है न कि आध्यात्मिक मण्डी की उत्तेजनाओं को शांत करने वाले। यहाँ प्रशान्ति है न कि दवा की मण्डी में बिकनेवाली नींद की दवायें। विश्वास यहाँ पर ज्योति है, न कि जंजीर।

अति संवेदनशीलता यहाँ की विस्मयकारी जीवन–शक्ति है। सत्यलोक में विश्वास न तो बन्धन है, न ही बोझ; न तो कट्टरता है न ही संघर्ष; यह तो परमानन्द, मंगल, एवं सौन्दर्य है। यहाँ का क्रियायोग प्रामाणिक है जो न तो कोई अधिकार जताता है और न ही आध्यात्मिक मंडी के मूर्खतापूर्ण एवं बढ़े–चढ़े दावे करता है। किसी प्रसिद्धि एवं प्रचार की प्रवृत्ति से अलग यहाँ का वातावरण शान्त एवं शीतल है। सत्यलोक अत्यन्त साधारण, प्रायः गुप्त एवं गुमनाम है। विचार के सतत मन्थन से उत्पन्न विभेदकारी चित्तवृत्ति का यहाँ समय–समय पर विस्फोट होता रहता है जो 'अन्यत्व' (पूर्ण चैतन्य) की एक झलक पाने के योग्य बनाता है। सत्यलोक में हम न तो सांत्वना और संतुष्टि की खोज करते हैं और न ही दुखों का शमन करने वाली दवा या दावे करते हैं। इस जगह पर ईश्वर की भी खोज नहीं करते हैं। यहाँ के पावन अस्तित्व की ऊर्जा में कदाचित् समस्त खोज एवं लालसा, इच्छाओं एवम् अपेक्षाओं का अन्त हो जाता है। हम स्वयं मंदिर बन जाते हैं क्योंकि हमारी अपेक्षायें शून्य हो जाती हैं, हमारी आकांक्षायें पूर्णता में विलीन हो जाती हैं, हमारी मुक्ति की आकांक्षा भी समाप्त हो जाती है। सत्यलोक में 'मन' जीवन का एक पैमाना है जबकि 'निर्मन' जीवन की सार्थकता है।

वे नौ मूल प्रश्न, जो हम सत्यलोक में अपने आप से पूछते हैं :–

१. क्या बाह्य या अपने अनुभव जैसे आन्तरिक किसी प्रभाव पर मानसिक रूप से निर्भर हुए बिना जीना संभव है?
२. क्या विश्वास–पद्धति से उत्पन्न अनुभव एवम् इन्हीं अनुभवों से परिपुष्ट होने वाली विश्वास–पद्धति के दुष्चक्र में फँसे बगैर शुद्ध अस्तित्व में होना संभव है?
३. क्या यह सत्य है कि गूढ़ आध्यात्मिक चेतना में विश्वास–पद्धति का कोई स्थान नहीं है?
४. क्या अपने अथवा दूसरों के बारे में किसी छवि के बिना रहना संभव है?
५. क्या विभिन्न प्रकार के मत, निर्णय अथवा निष्कष से मुक्त होना उचित है?

६. क्या जिन्दगी जीने का ऐसा कोई तरीका है जिसमें मनुष्य चोट अथवा चाटुकारिता से प्रभावित न होता हो?

७. क्या यह संभव है कि विभिन्न छवियों को मानवीय रिश्तों के बीच दखलंदाजी न करने दिया जाये और उनका उपयोग मात्र तकनीकी उद्देश्यों अर्थात् भवनों, पुलों, खिलौनों तथा वायुयानों आदि के निर्माण के लिए ही किया जाये?

८. सहैतुक प्रयास एक निश्चित कालक्रम में अनर्थकारी गतिविधियों की ओर ले जा सकते हैं जबकि अहैतुक क्रियायें वस्तुतः शुद्ध क्रियायें हैं। क्या अधिकार, आधिपत्य, पद एवं प्रधानता पाने की लालसा से मुक्त कोई प्रयास हो सकता

है?

९. क्या धर्मों, र्राष्टों, सम्प्रदायों, पन्थों, समूहों, समुदायों, आदर्शों, काल्पनिकताओं, सिद्धान्तों आदि के द्वारा खंडित चित्तवृत्ति के बिना जीने का कोई उपाय है?

सत्यलोक में क्रियायोग (स्वाध्याय, तापस, ईश्वर प्रणिधान) निम्नलिखित अनेक पहलुओं के रूप में समझा जाता है :–

| | | |
|---|---|---|
| स्वाध्याय | तापस | ईश्वर प्रणिधान |
| चिन्तन–मनन | अभ्यास | प्रत्यक्षबोध |
| राजयोग | हठयोग | लययोग |
| आविर्भाव | स्थायित्व | समाप्ति |
| चित् | सत् | आनन्द |
| आत्मनिरीक्षण | तीव्रीकरण | अन्तर्दृष्टि |
| ज्ञानयोग | कमयोग | भक्तियोग |
| सर्जनात्मकता | समेकन | पूर्ण बोध |
| ब्रह्मा | विष्णु | महेश्वर |
| मौलिक | धृति | मुक्ति |
| सांख्य | योग | वेदान्त |
| आत्मानुसन्धान | सेवा | समर्पण |
| अनुसंधान | स्थायित्व | प्रबोध |
| आरम्भ | निर्माण | मंगल |
| विवेक | अध्यवसाय | दिव्यता |
| विचारण | पुष्टीकरण | आरोहण |

।। लाहिड़ी वंश के मन्दिर–सत्यलोक में आयें और रूपान्तरित होयें ।।